अध्याय 47

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ परमेश्वर के लिए शिष्य निर्माण करने के इस पाठयक्रम व समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंपे।

2	आराधना (20 मिनट) *[स्वभाव का प्रगटीकरण]* **परमेश्वर व उसकी शिक्षाओं के प्रति खुद को समर्पित करना**

इस अध्याय में हम अपने आप को परमेश्वर व परमेश्वर की शिक्षाओं के प्रति समर्पित होने के द्वारा अपनी आराधना को प्रगट करना सीखेंगे।

1. समर्पण।

सर्मपण का अर्थ किसी चीज या किसी व्यक्ति के हाथों में अपने आप को सौंप देना होता है। इस अर्थ अपने आपको पूरी तरह से परमेश्वर के हाथों में सौंप देना होता है। यह भाव सेवा करने के दौरान प्रगट होता है।

2. हमारे शरीरों को समर्पित करना।

रोमियों 12:1; 6:12-13,19 को **पढ़ें।**

शरीरों। यहां पर हमारे शरीरों का अर्थ केवल हमारी देह से नहीं है। इसमें हमारी आत्मा, हमारा पूरा व्यक्तित्व भी शामिल है क्योंकि हमारा शरीर और उसके अंग मिलकर ही हमारी आत्मा, हमारे अस्तित्व व हमारे चरित्र के भावों को प्रगट करते हैं।

जोवित बलिदान। जब पशु बलि पशु को मारकर दी जाती है, उसी प्रकार से हमें हमारे बलिदान को हमारे शरीरों में जीवित अवस्था में परमेश्वर के सम्मुख लाना चाहिए। अब हम अपने पापमय स्वभाव के द्वारा चलायमान होकर अपने शरीर में जीवित नहीं हैं, लेकिन हमारा नया जन्म पाया हुआ स्वभाव हम पर प्रभुता करता है।

पवित्र बलिदान। 'पवित्र' शब्द का अर्थ है अलग किया हुआ व समर्पित। एक तरफ तो हम संसार की बुराई से अपने आप को अलग करते हैं। और दूसरी ओर इसी पापमय संसार में हम अपने आप को परमेश्वर व उसके कार्यो के लिए समर्पित करते हैं।

परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला बलिदान। हम अपने आप को हर एक उस बात के लिए समर्पित करते हैं जिसे परमेश्वर मान्यता देते या उसकी प्रशसां करते हैं। हम जिन जगहों पर जाते हैं, जिन गतिविधियों को करते हैं और जिन लोगों से हम मिलते हैं उन सब के द्वारा हम परमेश्वर का प्रसन्न करना चाहते हैं।

आराधना या सेवा करने का कार्य। इस प्रकार से अपने जीवनों को प्रत्येक दिन परमेश्वर के हाथों में सौंपने के द्वारा हम आत्मिक आराधना में शामिल हो जाते हैं! आराधना केवल चर्च या मण्डली में ही नहीं होती है! आराधना हमारे दैनिक जीवन में भो सक्रिय रहती है। हम परमेश्वर के राज्य व धार्मिकता की सेवा प्रतिदिन अपने जीवन को समर्पित करने के द्वारा परमेश्वर की सेवा करते हैं।

3. हमारे मन का समर्पण।

रोमियों 12:2 **पढ़ें।**

इस संसार के संदृश न बनो। हम अपने आप को इस बुरे संसार के स्वरूप में अपने आप को नहीं ढलने देते। हम नहीं चाहते कि यह संसार हमें अपने सांचे में ढाल दे। एक मसीही जन हर प्रकार की बुराई के सदृश्य बनने से बचना चाहता है: नास्तिक विचार धाराओं, झूठे धर्म, यौन अनैतिकता, बुरे मित्रों, निराशाजनक चर्चा, अश्लील पत्रिकाओं, आपत्तिजनक गतिविधियों,

भड़कीले वस्त्रों ,रूढ़ीवादी राजनीति, मादक पदार्थो का सेवन, हद से ज्यादा खेल से इत्यादि। एक मसीही व्यकित हर बुरे प्रभाव से बचना चाहता है। दूसरे लोगों की जीवनशैली और उनके आचरण की नकल हमें खींचकर परमेश्वर से दूर ले जाने वाली एक ऐसी शक्ति बन सकती है, जिससे परमेश्वर अप्रसन्न रहता है।

परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बदलना। हम अपने आप को नियमित तौर पर नये होते जाने के लिए समर्पित करते हैं। हालांकि सदृश्ता लोगों के बाहरी कार्यो के द्वारा प्रगट होती है, लेकिन रूपान्तरण अन्दरूनी बदलाव या विचारों, लक्ष्यों और स्वभाव का रूपान्तरण परमेश्वर के वचन द्वारा होता है। यह तब होता है जब हम सहयोग करने के लिए अपने आपको परमेश्वर के वचनों व उसकी आत्मा के हाथों में समर्पित कर देते हैं। आन्तरिक रूपान्तरण जो अन्ततः बाहरी बदलाव के द्वारा प्रगट होता है, परमेश्वर का प्रसन्न करने वाले जीवन को जीने का सबसे बेहतर तरीका है।

4. अपने अंगों को समर्पित करना।

आंखें। मत्ती 6:22-23। हम अपनी आंखों को परमेश्वर को समर्पित करते हैं, क्योंकि हमारी आंखें वे द्वार हैं जिनके द्वारा हम अपनी आत्मा में चीज़ों को प्रवेश करने देते हैं(अय्यूब 31:1)।

कान। यशायाह 50:4-5। हम अपने कानों को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करते हैं, क्योंकि हमारे कानों के द्वारा ही हम परमेश्वर की वाणी को सुन सकते हैं।

जीभ। मत्ती 12:34-37। हम अपनी जीभ को परमेश्वर के हाथों में समपित करते हैं, क्योंकि हमारी जीभ प्रगट करती है कि हमारे हृदय में क्या है(इफिसियों 4:15,29)।

आराधना।

समय लेकर एक या दो वाक्यों में परमेश्वर की आराधना करें।

आराधना करने के लिए आप अपने शरीर का कौन सा हिस्सा परमेश्वर को समर्पित करना चाहते हैं।

3.	**बाँटना** (20 मिनट)	***[एकान्त समय]*** **सभोपदेशक 1-4**

- ***आगे बढ़कर*** (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (सभोपदेशक 1,2,3 व 4)से क्या सीखा।
- अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुनें, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70मिनट)	***[अगुवाई]*** **मसीही अगुवे की विशेषताएं**

नय नियम में शिक्षा केवल अगुवे तक ही सिमित हैं।

मैनुएल 3 में, कलीसिया की अगुवाई के लिए अध्याय 34 देखें(1पतरस 5:1-7 पर बाइबल अध्ययन)

मैनुएल 4 में , मसीही कलीसिया में अगुवाई के एतिहासिक विकास के लिए परिशिष्ट 4 देखिए।

मैनुएल 4 में , डीकनों के लिए देखिए।

मैनुएल 6 में , मण्डली में महिलाओं के लिए परिशिष्ट 3 देखें।

मैनुएल 6 में , कलीसिया के अगुवों को सेवा के लिए भेजने के सामारोह के लिए अध्याय 17 देखें।

क.विश्वव्यापी कलीसिया के बुनियादी अगुवे

परिचय। विश्वव्यापी कलीसिया या मण्डली का प्रधान व अनन्त अगुवा यीशु मसीह है। विश्वव्यापी कलीसिया के बुनियादी अगुवे यीशु मसीह के प्रेरित पौलुस थे।

कलीसिया मसीह की देह है। यह देह संसार की बहुत सी मण्डलियों से मिलकर बनी होती (अर्थात स्थानीय मसीही संगतियां या व्यक्तिगत कलीसियाएं)है।

बाइबल में एक मण्डली(1 कुरिन्थियों 1:2) घर में संगति किया करती थी(घरेलू कलीसिया) (1कुरिन्थियों 16:19)। बाइबल के अन्दर सारी मण्डलियां स्वावलम्बी थी:"यरूशलेम की कलीसिया"(प्रेरितों 11:22),"अन्ताकिया की कलीसिया"(प्रेरितों 11:25),"सीरिया व किलकिया की कलीसिया"(प्रेरितों 15:41), "केसरिया की कलीसिया" (प्रेरितों 18:22) और "इफिसुस की कलीसिया"(प्रेरितों 20:17)। इन कलीसियाओं में केवल पुरनिये थे और पुरनियों के ऊपर कोई अधिकारी नहीं था। केवल मसीह ही हर एक मण्डली का प्रधान है।

1.यीशु मसीह ।

(1) मसीह व विश्वव्यापी कलीसिया।

मत्ती 16:18; इफिसियों 1:22-23; 1पतरस 2:25; 5:4(प्रेरितों 20:28) **पढ़ें।**

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह का विश्व व्यापी कलीसिया से क्या रिश्ता है?

ध्यान दें। यीशु मसीह सारे संसार में कलीसिया का संस्थापक, निर्माता और स्वामी है। यीशु सम्पूर्ण कलीसियाओं का प्रधान, बिशप(संरक्षक) और प्रमुख चरवाहा (पासबान) है। वह अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा नये नियम की कलीसिया का संस्थापक और स्वामी है। वह अपनी ज़मीनी और आसमानी सेवाकाई के कलीसिया का र्निमाण करने वाला है। वह ही एकमात्र प्रधान, और विश्वव्यापक मसीही सेवकाई का मुख्य अगुवा है। बाइबल में एक भी ऐसा संकेत नहीं दिया गया है कि कोई जन इस धरती पर यीशु मसीह का प्रतिनिधी बनेगा।

(2) मसीह बाइबल के द्वारा ही अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह किस प्रकार से कलीसिया व मसीहियों के जीवन में अपने अधिकार को इस्तेमाल करता है?

पढ़ें। यूहन्ना 8:31-32;(प्रेरितों 2027-32; इफिसियों 6:17; 1 तीमुथीयुस 3:14-15; 2 तीमुथीयुस 3:16-17; तीतुस 1:9; इब्रानियों 4:12-13)।

ध्यान दें। मसीह बाइबल व उसकी शिक्षाओं के द्वारा अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है। बाइबल, मसीहियों व कलीसिया के लिए मसीह की प्रगट इच्छा है। मसीह ने कलीसिया को अपना संविधान प्रदान किया है, अर्थात, बुनियादी शिक्षाएं जिसके द्वारा कलीसिया को चलाया जाना चाहिए। इन शिक्षाओं को ही नये नियम में अपनाया गया।

मसीहियों को बाइबल में लिखी हुई बातों से (1 कुरिन्थियों 4:6-7;1 कुरिन्थियों 1:19)! मसीहियों को पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कही गयी बातों से (व्यवस्थाविवरण 4:2; 5:32;यहोशू 1:7;यशायाह 29:13;यिर्मयाह 8:8) और नये नियम के प्रेरितों की बातों से आगे नहीं बढ़ना चाहिए(मत्ती 4:4-7; प्रेरितों 26:22; 28: 25; 1पतरस 1:9-12;2पतरस 3:1-2; प्रकाशितवाक्य 22:18-19)। मसीहियों में ऐसी रीतियों को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए जो परमेश्वर के वचनों को विरोध करती हैं। (मत्ती 15:3,6; मरकुस 7:7-8)!

(3) मसीह, पवित्र आत्मा के द्वारा अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है।

ध्यान दें। पवित्र आत्मा मसीह का आत्मा और धरती पर मसीह का प्रतिनिधि है। वह ही प्रत्येक स्थानीय व विश्वव्यापी मण्डली में यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है।

पढ़ें। यूहन्ना 16:13-15;(यूहन्ना 14:26; 15:26; 20:21-23;लूका 24:49;प्रेरितों 1:5-8)। पवित्र आत्मा के द्वारा, मसीह ने प्रेरितों को उनका काम पूरा करने के लिए तैयार किया, विशेषकर कलीसिया के बुनियादी अगुवे होने के लिए। पवित्र आत्मा के द्वारा, मसीह ने उनकी सत्य में अगुवाई की, उन्हें याद दिलाया की जब वह धरती पर था तो उसने उन्हें क्या शिक्षाएं दी थीं, और उन्हें वे सारी बातें सिखाई जो उनकी जानकारी के लिए ज़रूरी थीं। इस तरह से, मसीह के प्रेरित मसीह के अधिकृत

गवाह थे, जिन्होंने सुसमाचार प्रचार किया और लोगों को मसीह का अनुयायी बनाया और उन्होंने इस सारी सच्चाई को नये नियम की पुस्तकों में लिखा।

पढ़ें। प्रेरितों 15:28। पवित्र आत्मा के द्वारा, मसीह ने यरूशलेम की कलीसिया के पुरनियों और यीशु मसीह के प्रेरितों के साथ मिलकर अन्ताकिया की कलीसिया का प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों की सभा व उनके निर्णयों की अगुवाई की। प्रेरितों 16:4 में इस्तेमाल किया गया शब्द 'ठहराया'(ग्रीक:डोगमाटा केकरीमीना) एक कानूनी शब्द है लेकिन इस मतलब जबरन थोपना नहीं है, वरन इसे हम प्रेरितों की ओर से सुझाव मान सकते हैं। इस सुझाव को स्वीकार या अस्वीकार किया जा सकता है। मसीहियों को मूर्तिपूजा और यौन अनैतिकता से दूर रहना है(प्रेरितों 16:4)। और उस समय पर मसीहियों को अपने स्वतन्त्र आचरण के द्वारा यहूदियों को चोट न पहुचाएं। विश्वास में कमजोर भाईयों की खातिर उन्हें कुछ जरूरी चीजों को त्यागना था: 'कुछ जरूरी चीज़ों को'(ग्रीक:अपानागकेस),खास तौर पर मूर्तियों को समर्पित किया गया भोजन, गला घोंटे गये पशु का खून पीना या मीट खाना(प्रेरितों 15:28-29; रोमियों 14:1-6)। अत: दूसरी या तीसरी सदी की परम्परागत कलीसिया के परिषद के अधिकार के क्षेत्र में इसके द्वारा कुछ भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

बाइबल में नये नियम की कलीसिया में पुरनियों के ऊपर किसी भी प्रकार के परिषद या उनके प्रतिनिधित्व को ठहराये जाने का कोई भी प्रमाण प्राप्त नहीं है। नये नियम के समय में आधुनिक दौर के समान परिषद, धर्मसभा, या किसी भी डिनोमिनेशन का सम्मेलन जैसी कोई चीज़ नहीं थी और न ही इस बात का जिक्र पाया जाता है कि विश्व व्यापक तौर पर सब कलीसियाए मिलकर सार्वभौमिक कलीसियाओं की देखभाल कर रही थीं।

पढ़ें। यूहन्ना 16:8; (रोमियों 8:5-10; गलातियों 5516, 18,25; इफिसियों 6:17)। पवित्र आत्मा आज भी मसीहियों और उनके पुरनियों को याद दिलाता है, लेकिन उसकी बात कभी भी बाइबल की शिक्षा का विरोध नहीं करती।

(4) मसीह स्थानीय मण्डलियों के अधिकारियों के द्वारा अपने अधिकार का इस्तेमाल करता है।

प्रेरितों के काम 20:28 को **पढ़ें।** मसीह अपने अधिकार का इस्तेमाल मण्डली में पाये जाने वाले पुरनियों के दल के द्वारा(स्थानीय मसीही मण्डली जो किसी घरेलू कलीसिया या घरेलू संगति में मिलती है),लेकिन यह कार्य तब ही सम्भव हो पाता है जब पुरनिये स्वयं बाइबल के सत्य और अधिकार के प्रति समर्पित होते हैं। यह जानकर बहुत आराम मिलता है कि जब भी कहीं मण्डली मसीह के नाम में काम करने या आराधना करने के लिए जमा होते हैं तो वह उनके बीच में मौजूद होता है(मत्ती 18:20; 28:20)।

(5) मसीह के कामों के उदाहरण।

खोजें व चर्चा करें। पवित्र आत्मा द्वारा मसीह के कामों कुछ विशेष उदाहरण क्या हैं?

- यूहन्ना 16:8-10 **पढें।** मसीह लोगों को पाप, धार्मिकता और न्याय के प्रति निरूत्तर करता है।
- यूहन्ना 3:3-8; 2 थिस्लुनिकियों 2:13-14; 1 पतरस 1:2 **पढ़ें।** वह सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा लोगों को बुलाता है, उन्हें नया जन्म पाने के लिए प्रोत्साहित करता है,उनका उद्धार करता और उन्हें शुद्ध करता है।
- 1कुरिन्थियों 12:4-7, 11; इफिसियों 4:7 **पढ़ें।** वह अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए आत्मिक वरदानों की सहायता से मसीहियों को तैयार करता है।
- मरकुस 13: 34; 1 कुरिन्थियों 3:6; 12:5-7 **पढ़ें।** उसने संसार व मण्डली के अन्दर सेवा करने के लिए हर एक मसीही को कोई न कोई काम सौंपा।
- 1 कुरिन्थियों 12:18, 24-26 **पढ़ें।** वह जैसा जहां चाहता है अलग अलग स्थानीय मण्डलियों में मसीहियों को व्यवस्थि करता है ताकि विविधता होने पर भी मण्डलियों में एकता बनी रह।

तथापि, इन सभी क्षेत्रों में मसीहियों की व्यक्तिगत और पारस्परिक जिम्मेदारी होती है। यदि वे अपनी जिम्मेदारियों को पूरा नहीं करेगें तो वे कभी भी अपने जीवन में मसीह के कार्यों का अनुभव नहीं कर पाएंगे।

2. यीशु मसीह के प्रेरित ।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह के प्रेरित कौन थे? उनके काम व अधिकार क्या थे?

(1)यीशु मसीह के प्रेरित अनोखे प्रकार के लोग थे।

मरकुस 3:13-19 **पढ़ें।** यीशु मसीह के प्रेरित अनोखे प्रकार के लोग थे, क्योंकि उन्हें व्यक्तिगत तौर पर मसीह के द्वारा चुना गया, बुलाया गया, तैयार किया गया और भेजा गया, ताकि वे उसके गवाह बन सकें खास तौर पर उसके पुनरूत्थान के(प्रेरितों 1:21-22)।

(2) यीशु के प्रेरितों के सामने एक अनोखा लक्ष्य रखा गया।

यूहन्ना 16:12-15; (यूहन्ना 20:19-23; प्रेरितों के काम 1:8)**पढ़ें।** उन्हें विशेष काम के लिए पवित्र आत्मा की विशेष परिमाप से परिपूर्ण किया गया था: अर्थात कलीसिया के इतिहास के प्रारम्भ में सत्य की घोषणा करने के लिए, नये नियम की जिन पुस्तकों को उन्होंने लिखा उस में सत्य को लिखने के लिए, और हर जगह पर पहली स्थानीय कलीसिया स्थापित करने के लिए। इसलिए उन्हें विश्वव्यापी कलीसिया के जनक कहा गया(इफिसियों 2:20; प्रकाशितवाक्य 21:14)।

(3)यीशु मसीह के प्रेरितों के पास विशेषाधिकार प्राप्त थे।

पढ़ें। मत्ती 16:18-19; 18:18। उन्हें अपनी शिक्षाओं द्वारा सम्पूर्ण कलीसिया के लिए सिद्धान्तों को स्थापित करने का अधिकार दिया गया(प्रेरितों 15:28-29; 2तीमुथीयुस 1:13-14), मसीहियों को उनकी शिक्षाओं को मानने का आदेश देने का अधिकार(प्रेरितों 16:4; रोमियों 6:17; 2 कुरिन्थियों 10:4-6; 2 थिस्लुनिकियों 3:14), परमेश्वर के राज्य में लोगों को शामिल करना तथा किसी को निकालना(प्रेरितों 8:14-17; 5:1-11), स्थानीय कलीसिया के अगुवे की नियुक्ति का अधिकार(प्रेरितों 14:23) और एक प्रेरित होने के विशेष चिन्हों को प्रगट करने का अधिकार दिया गया है(मरकुस 16:20; 2 कुरिन्थियों 12:12;इब्रानियों 2:3-)।

(4) यीशु मसीह के प्रेरितों का कोई उत्तराधिकारी नहीं है।

प्रेरितों 1:21-26;(इफिसियों 2:19-20; 3:4-5;प्रकाशितवाक्य 21:14)। यीशु मसीह के प्रेरितों में यीशु मसीह के ग्यारह चेले (लूका 24:9,33) और पौलुस प्रेरित (प्रेरितों 22:14; 26:15-18; 1 कुरिन्थियों 1:1; 9:1)शामिल हैं। यीशु के प्रेरितों के उत्तराधिकारी नहीं है क्योंकि उसके बाद की समय के लोग उन आवश्यक मांगों को पूरा नहीं कर पाए जो प्रेरितों 1:21-22 पर आधारित थीं। यीशु मसीह के प्रेरितों की संख्या हमेशा बारह ही रही(प्रकाशितवाक्य 21:14)। बाइबल में एक भी ऐसा जिक्र नहीं दिया गया है जिसमें यह बताया हो कि प्रेरितों के वंशज आगे चलकर बिशप बनें। केवल यीशु मसीह ही कलीसिया के बिशप या प्रधान थे (1पतरस 2:25)।

(5) यीशु मसीह के प्रेरित कलीसिया के प्रेरितों से अलग होना चाहिए।

मसीही मण्डलियों के प्रेरित मण्डलियों के प्रतिनिधी या राजदूत(2 कुरिन्थियों 8523; फिलिप्पियों 2:25) या विस्तृत बोध रखने वाले मिश्नरी प्रेरित, तथा मण्डलियों को स्थापित करने के द्वारा मसीह और उसके कामों का प्रतिनिधित्व लोग थे(प्रेरितों 14:1-4; 1 थिस्लुनिकियों 2:6-7)। जिन लोगों को प्रेरिताई एक आत्मिक वरदान के तौर पर प्राप्त हुई है(1कुरिन्थियों 12:28;इफिसियों 4:11-16) उन्हें मण्डली पर अधिकार जताने के लिए नहीं,वरन उन्हें सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया है, खास तौर पर कलीसिया में मसीहियों को तैयार करने के लिए। इन सभी प्रेरितों,भविष्यद्वक्ताओं, प्रचारकों, शिक्षकों और पासबानों को कलीसिया के पुरनियों की अधीनता में होकर काम करना चाहिए(1तीमुथीयुस 5:17)। यहां तक कि प्रेरित पतरस ने भी जहां सेवकाई निभाई वहां की मण्डली में सह पुरनिए के रूप में काम किया (पतरस 5:1-2)। यीशु मसीह के प्रेरितों(पौलुस और यूहन्ना)ने लोगों को झूठे शिक्षकों से सावधान रहने के लिए कहा: अर्थात ऐसे लोगों से सावधान रहने को जो अपने आप को यीशु के प्रेरितों के समान बताते हैं। ऐसों का पर्दाफाश होना चाहिए और ऐसों का सामना करना चाहिए(2 कुरिन्थियों 11:1-15; प्रकाशितवाक्य 2:2; यूहन्ना 9-10)।

सारांश। यीशु मसीह सदैव विश्वव्यापी कलीसिया के संस्थापक, निर्माता और स्वामी है। विश्व व्यापी कलीसिया मसीह की देह है। यीशु मसीह के चेले या प्रेरित उस विश्व व्यापी कलीसिया के बुनियादी अगुवे थे। मसीह ने उनका इस्तेमाल करते हुए

यहूदियों,सामरियों, और अन्यजातियों के बीच में प्रथम ऐतिहासिक कलीसियाओं की स्थापना की और स्थानीय मण्डलियों में अगुवों को तैयार किया व ठहराया।

ख. मसीही मण्डलियों में प्रशिक्षित अगुवे।

परिचय। पुरनिये, पुराने नियम के समय में नियुक्त किये गये अगुवे थे। पुरनिये नये नियम के समाज (अर्थात विश्व व्यापी कलीसिया जो अलग अलग स्थानों में बहुत सी स्थानीय कलीसिया से मिलकर बनी है)में परमेश्वर द्वारा नियुक्त किये गये अगुवे भी हैं। जब वे जीवित थे, तब मसीह के प्रेरितों ने स्थानीय कलीसियाओं में पुरनियों के रूप में भी काम किया(प्रेरितों 6:2-4; 1पतरस 5:1; 2 यूहन्ना 1:1)। डीकनों को किसी स्थानीय कलीसिया की अगुवाई करने के लिए नहीं नियुक्त किया गया है बल्कि वे कलीसिया के अन्दर कुछ विशेष काम करने के लिए ठहराए गये हैं।

1. पुराने नियम में पुरनिए।

निर्गमन 3:16; 18:17-26; व्यवस्थाविवरण 1:9-18; 31:28; भजन संहिता 107:32 **पढ़ें।**

खोजें और चर्चा करें। किस प्रकार से पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था?

ध्यान दें। लगभग 1407 ई.पू मरूस्थल में, मूसा ने कहा था " इसलिए तुम अपने अपने गोत्र में से बुद्धिमान और प्रसिद्ध पुरूष चुन लो, और मैं उन्हें तुम पर मुखिया ठहराऊँगा (व्यवस्थाविवरण 1:13)। परमेश्वर के पुराने नियम के समाज में, अर्थात 1447 ईसा पूर्व में(निर्गमन 3:18;4:29), पुरिनये गोत्रों के मुखिया हुआ करते थे(व्यवस्थाविवरण 31:28; 1 शमूएल 4:3;एज्रा 6:7; नहेमायाह 19:1) या वे किसी कुल के अगुवा हुआ करते थे(2 शमूएल 12:17)। जब इस्राएली लोग आकर फिलिस्तीन में बस गये,हर शहर व नगर या किसी प्रमुख स्थान में उनके अपने पुरनिये या प्रधान होने लगे(व्यवस्था विवरण 21:3;रूत 4:2 नीतिवचन 31:23)।

प्राचीनों का चुनाव मुख्यत: उनकी योग्यताओं, परमेश्वर का भय मानने, उनकी विश्वासयोग्यता, बेईमानी से की जाने वाली कमाई से घृणा(निर्गमन 17:26),उनकी अगुवाई(गिनती 11:16-17), उनकी बुद्धि, उनकी समझ और समाज में उनकी प्रतिष्ठा के आधार पर किया जाता था(व्यवस्थाविवरण 1:9-18)। उनका काम हजारों,सैकड़ों और पचास लोगों पर व दस-दस लोगों पर, अपनी योग्यता, अनुभव, विशेष करके सेवा करने की योग्यता के अनुसार सभी प्रकार के लोगों का न्याय करना था।

परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता, महायाजक,याजकों और लेवियों को नियुक्त किया लेकिन उन्हें इस्राएल में लोगों पर प्रभुता करने या अपनी पीछे अपने वंशजों प्रभुता का अधिकार देने के लिए नहीं ठहराया गया था वरन उन्हें इस्राएक में विविध धार्मिक सेवाएं निभाने के लिए चुना गया था। भविष्यद्वक्ता लोगों के सामने परमेश्वर व उसके वचनों का प्रतिनिधित्व करते थे और याजक परमेश्वर के सामने लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे। जब इस्राएल के लोगों ने अपने लिए एक राजा होने का चुनाव किया, उस समय वास्तव में परमेश्वर को अपने एकमात्र राजा स्वीकार करने स इनकार कर दिया। (1शमूएल अध्याय 8)

2. मिडो-फारसी,यूनानी और रोमी साम्राज्य के समय में प्राचीन ।

विदेशी राजनैतिक साम्राज्य में पुरनियों न अगुवाई को कई वर्गो व श्रेणियों में विभाजित कर दिया।

(1)मिडो- फारसी साम्राज्य का काल(559-331 ई.पू)

बेबिलोन की गुलामी के पश्चात(538 ई.पू), विदेशी मिडो-फारसी साम्राज्य काल के दौरान, एज्रा के अधीनता में एक सत्ता का उदय हुआ(458 ई.पू), जो कुछ प्रमुख स्थानीय अगुवों व न्यायधीशों व न्यायपालिकाओं से मिलकर बनी थी(एज्रा 7:25-26;10514)।

(2) ग्रीक सैल्यूसाइट साम्राज्य का दौर (312 ई.पू से आगे)

इस दौरान, एक ईकाई जिसे 'पुरिनयों की परिषद' (ग्रीक: गेरोऊसिया)कहा जाता था अपने अस्तित्व में आयी, जो पुरनियों, याजकों और महायाजकों से मिलकर बनी हुई थी। इसने राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व किया(1 मकाबीस 12:6)। अत: एक पुरनियों का परिषद पूरे यहूदी राष्ट्र का संचालन कर रहा था।

(3)रोमी सम्राज्य काल(प्रथम शताब्दी ई.पू और ई.प)

इस काल के दौरान, हर एक स्थानीय जिलों में अपना 'पुरनियों का परिषद' था। इस प्रकार से उनके बीच में बहुत से पुरनियों के परिषद थे। रोमी पैरवी करने वालों के काल में(6-66 ई.प.), 'पुरनियों की सबसे बड़ी परिषद' यरूशलेम में थी और उसे

'सेन्हेड्रिन' के नाम से जाना जाता था। इसमें पुरनिये, मुख्य याजक और व्यवस्थापक शामिल थे(मत्ती)। पुरनिये सेन्हेड्रिन में सह सदस्य थें जो यरूशलेम के कुलीन परिवार के लोगों से मिलकर बनी थी। रोमी सम्राज्य ने सेन्हेड्रिन को सभी राष्ट्रीय मुद्दों पर हस्तक्षेप करने का अधिकार दिया था(लेकिन उन्हें कर, राजनेताओं और अगुवों पर अधिकार नहीं था)। सेन्हेड्रिन को यहूदियों के बीच में टुकड़ियों में रहने वालों के रूप में भी जाना जाता था (प्रेरितों 22:5)।

3. नये नियम की यहूदी मण्डलियों में प्राचीन।

प्रेरितों 1:15-26 **पढ़ें।** प्रेरित पौलुस व लगभग 120 विश्वासियों ने यहूदा की जगह पर प्रेरित होने के लिए मत्ती को चुना। लेकिन ऐसा जान पड़ता है कि पतरस ने अपने अधिकार की हद पार करके यह काम किया, क्योंकि हम उस के बाद मत्ती का जिक्र फिर कभी नहीं पाते और मसीह ने पौलुस को अपना प्रेरित होने के लिए चुना(प्रेरितों 9:15; प्रेरितों 22:6-10; प्रेरितों 26:12-18; 1 कुरिन्थियों 9:1;रोमियों 1:1)।

प्रेरितों 2:42; प्रेरितों 6:1-4; 1 पतरस 5:1; 3 यूहन्ना 1 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। यहूदियों के बीच में प्रथम मण्डली का मार्गदर्शन किस प्रकार से किया गया?

ध्यान दें। नये नियम के काल में, पिन्तेकुस्त के बाद, चेलों का पहला दल यरूशलेम में परमेश्वर का समुदाय बन गया, पुराने नियम के समय में भी सम्भत: इसी वर्ग के लोगों में से परिवार के मुखिया और प्रभावशाली लोगों को पुरनिये के रूप में चुना गया था। उन्हें डीकनों के समान मण्डली के विश्वासियों द्वारा ही चुना गया था(प्रेरितों 6:1-7)।

लूका(प्रेरितों6:4),पतरस (1 पतरस 5:1) और यूहन्ना (3 यूहन्ना 1) स्पष्ट बताते हैं कि यीशु मसीह के प्रेरित निश्चय ही स्थानीय मण्डलियों में पुरनियों के रूप में कार्यरत थे। मण्डली में पुरनियों का प्रमुख काम प्रार्थना करना और परमेश्वर के वचनों को बांटना था (प्रेरितों 6:4)।

4. नये नियम की गैर मसीही मण्डली में प्राचीन।

प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। गैर मसीहियों के बीच में स्थापित की गयी मण्डलियों को मागदर्शन किस प्रकार किया गया?

ध्यान दें। प्रेरित व उनके सह-कार्यकर्ता(आधुनिक मिश्नरी या कलीसिया के चर्च-स्थापित करने वालों से तुलना करें। ने नई कलीसिया की स्थापना की। प्रत्येक मण्डली में अगुवाई करने के लिए पुरनियों को ठहराया गया, जिस तरह से प्ररितों की पुस्तकें स्पष्ट रूप से बताती है। मण्डलियों में कभी भी केवल एक मण्डली नहीं थी(उदाहरण के लिए एक याजक या एक पासबान),लेकिन सदैव पुरनियों को एक दल हुआ करता था, जो मण्डली के सारे कार्यों को किया करते थे। अगुवों के इस दल को पुरनियों का परिषद कहा जाता था।(1 तीमुथीयुस 4:14)।

सारांश। यीशु मसीह कलीसिया का सस्थापक, निर्माता और स्वामी है(मत्ती 16:18; प्रेरितों 20:28)। वह ही कलीसिया का सिर,बिशप व प्रधान अगुवा है(इफिसियों 1:20-23; 1पतरस 2:25;5:4)। वह ही वास्तव में महायाजक और परमेश्वर द्वार ठहराया गया प्रेरित है और उसे मसीहियों द्वारा स्वीकार किया गया है(इब्रानियों 3:1)। यीशु मसीह आज भी अगुवा है: वह ही सम्पूर्ण कलीसिया की देह का प्रमुख चरवाहा और बिशप है।

उसने मसीही मण्डली स्थापित करने के लिए उन्हें बुलाया(मत्ती 16:18-19; इफिसियों 2:20; प्रकाशितवाक्य 21:14)। प्रेरित सम्पूर्ण कलीसिया के एतिहासिक बुनियादी अगुवे थे।

यीशु मसीह के प्रेरित और उनके सह कार्यकर्ताओं ने पुरनियों को प्रथम कलीसिया के अगुवे होने के लिए ठहराया था(प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5)। अगुवे आज भी स्थानीय कलीसिया में ठहराये गये अगुवे होते हैं ! जबकि यीशु मसीह के चेलों के कोई उत्तराधिकारी नहीं हो सकते(प्रेरितों 1:21-22), बाइबल में यीशु मसीह के प्रेरितों द्वारा लिखित निर्देशों के अनुसार प्रत्येक मण्डली लगातार प्रेरितों को अपने अगुवे के रूप में चुनते रहे(प्रेरितों 20:17,28;1 तीमुथीयुस 3:1-7,14-15;5:17-22; तीतुस 1:5-9; 1पतरस 5:1-4)।

ग. प्राचीनों का परिषद

परिचय । नये नियम के अनुसार, प्रत्येक मण्डली उन में एक समूह के द्वारा संचालित होनी चाहिए, जिन्हें पुरनियों को दल या ईकाई कहा जाता है(ग्रीक: प्रेसब्यूटेरियन)(1 पतरस 4:14; प्रेरितों 20:17,28)। आज हम इस प्रकार के पुरनियों के दल को बोर्ड ऑफ एल्डर या पुरनियों का परिषद कह सकते हैं। नये नियम में, शब्द चरवाहा(यूनानी भाषा: पोईमेन, इंगलिश: पास्टर)और संरंक्षक (यूनानी: एपिस्कोपोस, अग्रेजी में: बिशप) को हमेशा पुरनियें के साथ में जोड़ा जाता है।

1. 'प्राचीन', 'चरवाहा' और 'संरक्षक')।

प्रेरितों 20:17,28; तीतुस 1:5,7, 1 पतरस 5:1-4 पढ़ें।

खोजें व चर्चा करें। नये नियम में पाये जाने वाले 'प्राचीन', 'चरवाहे' और 'संरक्षक' शब्दों में क्या फरक है?

ध्यान दें।

(1) नये नियम में इन शब्दों को अन्दर ही अन्दर अलग अलग परिस्थितियों में इस्तेमाल किया गया है?

पुरनियों के लिए ग्रीक शब्द है 'प्रेस्ब्यूटरस'। अंग्रेजी भाषा का शब्द 'याजक' यूनानी प्रेस्ब्यूटर्स से लिया है।

डीकन के लिए यूनानी भाषा में 'डीआकोनोस" के नाम से जाना जाता है। अग्रेजी का शब्द डीकन अग्रेजी के शब्द डीकोनास से जन्मा है।

चरवाहे के लिए चरवाहा शब्द 'फोईमिन' है, और चरवाहें को लैटिन भाषा में 'पास्टर' कहा जाता है। अग्रेजी का शब्द पास्टर लैटिन के शब्द पास्टर से आता है।

यूनानी भाषा में निरिक्षक शब्द'एपिस्कोपोस' है। अंग्रेजी भाषा में कहा जाने वाला शब्द 'बिशप' शब्द 'इपिसकोपोस' से लिया गया है।

नये नियम काल के दौरान(30-97 ई.प), शब्द पुरनिया (यूनानी: प्रेस्ब्यूटेरोस, अग्रेजी में: प्रीस्ट), चरवाहा(लैटिन और अंग्रेजी में: पास्टर) और निरिक्षक(यूनानी: एपिसकोपोस, अंग्रेजी में: बिशप) को मतलब एक ही व्यक्ति से है।

- प्रेरितों के काम में, सारे पुरनियों ने एक चरवाहें(पासबान) और निरिक्षक(बिशप) के रूप में काम किया(प्रेरितों 20:28)!
- तीतुस में, सारे पुरनिये(तीतुस 1:5) निरिक्षक(बिशप) कहलाये (तीतुस 1:7)।
- 1पतरस में, सारे पुरनियों(1पतरस5:1) ने चरवाहों (पासबानों) और निरिक्षकों (बिशप)(1पतरस5:2) का काम प्रधान चरवाहे अर्थात यीशु मसीह की अधीनता में रहते हुए किया।

यह स्पष्ट दिखाता है कि लूका,पौलुस और पतरस ने पुरनिया, चरवाहा और निरिक्षक शब्द का इस्तेमाल नये नियम में बहुतायत से किया। वर्तमान में भले ही इन शब्दों को एक दूसरे से अलग समझा जाने लगा हो लेकिन नये नियम के काल में इन तीनों शब्दों का अर्थ एक ही था।

(2) नया नियम सिखाता है कि प्रत्येक मण्डली में अपनी पुरनियों की परिषद थी जिन्हें अगुवा माना जाता था।

नये नियम की कलीसिया में अगुवों के बीच में कोई वर्गीकरण नहीं था। मसीही कलीसियाओं में केवल एक ही तरह से अगुवों को ठहराया गया था, जिन्हें हर मण्डल में पुरनियों के परिषद के नाम से जाना जाता था(यूनानी: प्रेस्ब्यूटीरियन)(1पतरस 4:14)। इस पुरनियों की इस ईकाई में सभी पुरनिए अपनी मण्डली से जुड़ी अगुवों की जिम्मेदारियों को पूरी किया करते थे(प्रेरितों 11:30; 14:23; 15:2,22; 20:17; 1तीमुथीयुस 5:17; तीतुस 1:5; याकूब 5:14;1पतरस 5:1)।

(3) इन अलग अलग शब्दों के मतलब

तीन शब्द: 'प्रेस्ब्यूर्टस' का अर्थ पुरनिया,'पोईमन' या पास्टर का मतलब चरवाहा और 'इपिस्कोपोस' का अर्थ निरिक्षक कलीसिया में तीन अलग अलग उपाधियों या कार्यालय को नहीं दर्शाते। ये सब मिलकर एक कलीसिया के कार्यालय, अर्थात पुरनिये को दर्शाते हैं। वे कलीसिया के अगुवों के समूह को तीन अलग अलग पहलुओं से प्रदर्शित करते हैं।

शब्द 'पुरनिया' उनके कार्यालय और उनकी परिपक्वता,अनुभव और उस आदर को दर्शाता है, जो इन अगुवों को प्राप्त था।

'चरवाहा' या 'निरिक्षक' शब्द उनके कार्य के स्वभाव को दर्शाते हैं।

नया नियम हमें यह सिखाता है कि सभी स्थानीय कलीसियाओं के पुरनिए चरवाहे और मण्डली के निरिक्षक हैं। उन सभी को पासबानी करने,प्रबन्ध करने और शिक्षा प्रदान करने क अधिकार प्राप्त हैं।

(4) मसीही कलीसिया में अगुवाई के ऐतिहासिक विकास से वर्गीकरण या श्रेणीबद्धता की ओर।

अब आप मैनुएल 4, परिशिष्ट 19 'मसीही कलीसिया के अगुवेपन का ऐतिहासिक विकास'।

2. बाइबल के अनुसार पुरनियों या प्राचीनों की योग्यताएं।

1तीमुथीयुस 3:1-7; तीतुस 1:6-9 **पढ़ें।**

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के अनुसार एक प्राचीन में क्या योग्यताएं होनी चाहिए?

ध्यान दें। किसी भी पुरूष को केवल तभी पुरनिये या प्राचीन के रूप में ठहराया जा सकता है जब वह बाइबल की मांगों या अपेक्षाओं को पूरा करता हो।

प्राचीनों की योग्यताओं को तीन भागों में बांटा जा सकता है:

(1) उसका व्यक्तिगत व्यवहार ।

वह अपने स्वभाव और इच्छाओं में संयमी होना चाहिए। धन के क्षेत्र में,वह ईमानदार और इस धरती पर अपने लिए सम्पत्ति इकट्ठा करने वाला नहीं होना चाहिए।

(2) उसका पारिवारिक जीवन।

महिलाओं के क्षेत्र में, वह अपनी पत्नी के प्रति वफादारी का नमूना होना चाहिए। यदि वह अविवाहित है, तो उसे सभी महिलाओं के प्रति शुद्धता का नमूना होना चाहिए। बच्चों के सन्दर्भ में उसे अपने बच्चों को मसीह पर भरोसा रखना और आज्ञा मानना तथा अपने माता पिता का आदर करना सिखाना चाहिए।

(3) उसकी सेवकाई की योग्यता

पविपक्वता के सन्दर्भ में, वह नया चेला या अपरिपक्व मसीही नहीं होना चाहिए(1तीमुथीयुस 3:6)। बाइबल के सन्दर्भ में, उसकी बुनियाद अटल सिद्धान्तों पर रखी होनी चाहिए,और वह प्रचार करने,शिक्षा देने और लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए बाइबल का इस्तेमाल करने में सक्षम होना चाहिए(1तीमुथीयुस 3:2; तीतुस1:9)।

3. प्राचीनों के काम।

(1) प्राचीन का सबसे पहला काम परमेश्वर की भेड़ों अर्थात विश्वासियों का चरवाहा या पासबान होना है।

प्रेरितों के काम 20:28-31; 1 पतरस 5:2 पढ़ें।

खोजे और चर्चा करें। मण्डली का पासबान या चरवाहा होने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। चरवाहों, अर्थात प्राचीनों को लोगों को मण्डली के लोगों की चरवाही करने की जिम्मेदारी सौंपी जाती है।

चरवाहे के रूप में एक प्राचीनों की जिम्मेदारियां:

- उनकी ज़िम्मेदारी है कि वे ठीक उसी तरह से मण्डली की देखभाल करें जिस प्रकार से यीशु, अर्थात अच्छा चरवाहा,सारे संसार में कलीसिया की देखभाल करता है(1पतरस 2:25; भजन 23)।
- एक साथ मिलकर प्राचीन लोग मण्डली के लोगों की आत्मिक बढ़ौतरी और उनकी कुशलता को ध्यान में रखते हुए उनको खिलाते,उनकी सुरक्षा करते,उनकी देखभाल करते और उनका मार्गदर्शन करते हैं।
- प्राचीनों का यह कर्तव्य है कि वे एक साथ मिलकर अनाथ, विधवाओं और नये विश्वासियों जैसे मण्डली के जरूरत मन्द लोगों की चिन्ता व देखभाल करें।(1तीमुथीयुस 5:16)
- वे लोगों के घर जाकर बीमारों के लिए प्रार्थना करते हैं(याकूब 5:14-15)।
- प्राचीन एक साथ मिलकर झूठे शिक्षकों व मण्डली के लोगों को बहकाने वाले लोगों के प्रति चौकन्ने होते हैं (प्रेरितों 20:29-31)

हर एक प्राचीन दूसरे प्राचीन पर और मण्डली के सदस्यों पर नज़र रखता है(प्रेरितों 20:28)। इस तरह से, मण्डली के सदस्य व प्राचीन एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी ठहरते हैं।

प्राचीनों को पासबान के रूप में अपने काम को एक पद या उपाधि के रूप में नहीं लेना चाहिए, वरन एक सेवा मानकर करना चाहिए। इसके अलावा एक मण्डली में केवल एक ही पासबान नहीं होना चाहिए। प्राचीनों के समूह में हर एक पासबान या चरवाहा होना चाहिए और उसके पास पासबानी करने की ज़िम्मेदारी होनी चाहिए।

(2) प्राचीन की दूसरी जिम्मेदारी परमेश्वर के भवन का भण्डारी होना है।

1थिस्लुनिकियों 5:12-15; 1 तीमुथीयुस 3:5; 5:17;तीतुस 1:7।

खोजें व चर्चा करें। कलीसिया का भण्डारी होने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। एक भण्डारी होने के नाते, प्राचीनों को मण्डली की सम्पत्ति और गतिविधियों को निर्देशित करने और उनका प्रबन्ध करने की ज़िम्मेदारी प्राप्त होती है।(यूनानी: ओईकोस)

भण्डारी के रूप में प्राचीन की जिम्मेदारी(निर्देशक व प्रबन्धक):

प्राचीनों को (डीकन नहीं हैं) मण्डली के कामों को निर्देशित करना चाहिए।

- थिस्लुनिकियों और तीमुथीयुस में, प्राचोन के काम अधिकार करना, *निर्देशित करना या प्रबन्ध करना बताया गया है, जिसका अर्थ है कि वह एक आदर्श के रूप में लोगों की अगुवाई करता है*(यूनानी: प्रो-हिस्तीमि)
- तीतुस की पुस्तक में, प्राचीन के काम *भण्डारीकरण,प्रबन्ध करना और सम्पूर्ण घराने की व्यवस्थित करने के रूप म* दर्शाया गया है। (यूनानी: ओईकोनोमोस)

तथापि, एक प्राचीन के काम करने का तरीका उसके हाथों में सौंपे गये लोगों पर प्रभुता करना नहीं, लेकिन उनके आगे एक नमूना बनकर अगुवाई करना है(1 पतरस5:2-3)। यदि कोई प्राचीन अपने परिवार का ठीक प्रकार से रखरखाव नहीं कर सकता(1तीमुथीयुस 3:4-5)या उसके बच्चों या पत्नि को उसका ज्यादा ध्यान या समय चाहिए, तो उसे अपने परिवार को पर्याप्त समय देने के लिए इस्तीफा दे देना चाहिए। उसके जीवन में सारी जिम्मेदारियों को लेकर एक सन्तुलन होना चाहिए।

प्राचीन मण्डलियों की सभा का संचालन करते हैं।

वे नियमित और विशेष सभाओं को प्रोत्साहित व उनकी अगुवाई करते हैं।

- नियमित सभाओं का मतलब उदाहरण के तौर पर प्रभु के दिन अर्थात रविवार को छोटे छोटे समूहों में बाइबल अध्ययन,प्रार्थना और संगति के लिए मिलना है (प्रेरितों 2:42)।
- विशेष सभाएं उदाहरण के लिए बपतिस्मा की सभा या प्रभु भोज व ईस्टर का उत्सव,विवाह और दफन या किसी के घर पर दौरा करना और लोगों को तैयार या प्रशिक्षित करने वाली सभा तथा अन्धकार की शक्तियों के खिलाफ आत्मिक युद्ध करने के लिए प्रार्थना सभा हैं।

प्राचीन संसार भर में मण्डली के संचालन का काम संभालते हैं।

वे इन गतिविधियों को प्रोत्साहित करते तथा इनका संचालन करते हैं।

- वे कलीसिया के सदस्यों को अपने परिवारों और पड़ोस में सुसमाचार प्रचार करने के लिए, स्थानीय संस्कृति और स्कूलों,समाज और सरकार में मसीही गवाही बनने के लिए (मत्ती 5:13-16; 10:32-37; प्रेरितों 5:42)और संसार में हर प्रकार के लोगों के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं(1तीमुथीयुस 2:1-2)।
- वे दूसरे क्षेत्रों और देशों में मिश्नरी कार्यों, विशेष दर्शन के साथ काम करने वाली मसीही संस्थाओं और दूसरे स्थानों में जरूरत मन्द मण्डलियों की सहायता करते हैं(रोमियों 16:23-24; फिलिप्पियों 1:5; 4:15-16; 3यूहन्ना 5-8; 2 कुरिन्थियें 8)।

प्राचीन मण्डली में प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन करता है।

वे इन गतिविधियों को प्रोत्साहित करते और इनका संचालन करते हैं।

- वे अपनी मण्डली में शिष्य निर्माण करने वाले कार्यक्रम का आयोजन करते हैं। सभी लोगों को मसीही परिपक्वता में बढ़ना ज़रूरी है।
- वे अलग अलग प्रकार की सेवा कार्य करने के लिए सदस्यों को तैयार करते हैं(इफिसियों 4:11-16)।
- वे बपतिस्मा की कक्षाओं, बच्चों, जवानों, व्यस्कों, प्रौढ़ और सुसमाचार प्रचार करने वाले दल के लिए शिक्षा की कक्षाओं का आयोजन करते हैं।

प्राचीन कलीसिया के सदस्यों को एक मसीही के रूप में व्यक्तिगत तौर पर कार्य करने में सहायता करते हैं।

वे प्रोत्साहित करते तथा निरिक्षण करते हैं कि कहां व्यक्तिगत तौर पर सहायता की जा सकती हे।

- वे सारे सदस्यों से अनुरोध करते हैं कि वे आपस में एक दूसरे से प्रेम करें और भले कामों को करन में प्रयत्नशील रहें(इब्रानियों 10:24-25)
- वे धीरज व सावधानी के साथ निर्देश देते हुए सदस्यों को सुंधारते, डांटते और विशेषतौर पर उन्हें प्रोत्साहित करते हैं(2तीमुथीयुस 4:1-5; तीतुस 2:15)।
- वे उन सभी सदस्यों को परामर्श देने का प्रबन्ध करते हैं जिनके जीवन में समस्याएं व चोट हैं(1 थिस्लुनिकियों 5:12-15)।
- वे उन सदस्यों को अनुशासित करते हैं जिन्होंने कोई गम्भीर पाप कर दिया हो(मत्ती 18:15-17)।

प्राचीन, मण्डली के सदस्यों की अलग अलग व्यक्तिगत कार्यों को करने में सहायता करता है।

वे निम्नलिखित गतिविधियों का प्रोत्साहित करते और उनमें लोगों की सहायता करते हैं।

- वे मण्डली के सभी सदस्यों को, परमेश्वर द्वारा व्यक्तिगत तौर दिये गये कामों व वरदानों के आधार पर अलग अलग कामों में सक्रिय होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- वे उन्हें अपने आत्मिक वरदानों और योग्यताओं को ढूंढ़ने में सहायता करते तथा उन्हें अवसर प्रदान करते हैं कि वे उन लक्ष्यों को पूरा करने में उन वरदानों को इस्तेमाल कर सकें। इसमें लोगों को उसकाना(अग्नि प्रज्वलित करना),परखना, जांचना,सीमित करना और इस बात का ध्यान रखना कि सभी आत्मिक वरदान बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार कार्य कर रहे हैं (1तीमुथीयुस 4:14; 2 तीमुथीयुस 1:6; 1 थिस्लुनिकियों 5:19-21; 1 कुरिन्थियों 12:10; 1 यूहन्ना 4:1; 1 कुरिन्थियों 14:26-40)।

(3) प्राचीन का तीसरा काम परमेश्वर के वचन का शिक्षक होना है।

1 थिस्लुनिकियों 5:12; 1 तीमुथीयुस 3:2; 5:17 और तीतुस 1:9 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। मण्डली में परमेश्वर के वचनों का शिक्षक होने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। एक शिक्षक के रूप में, प्राचीनों को उपदेश देने,शिक्षा देने, सलाह व लोगों को उलाहना देने के लिए **बाइबल का इस्तेमाल करनी की** जिम्मेदारी सौंपी गयी है।

- शिक्षक व उपदेशक के रूप में प्राचीन की जिम्मेदारियां:
- वे मसीही और गैर मसीही के सामने समान रूप में परमेश्वर का वचन प्रचार करते हैं(1तीमुथीयुस 5:17)।
- वे मसीही व गैर मसीहियों के साथ में यीशु मसीह के बारे में चर्चा करने के लिए एक समान तरीके से बाइबल का इस्तेमाल करते हैं(प्रेरितों 17:1-4,11)।
- वे बाइबल के लिखित वचनों के अनुसार ही सदस्यों को परमेश्वर की सिद्ध इच्छा को लोगों के सामने प्रगट करते हैं (प्रेरितों 20:20-27)।
- वे सदस्यों को मसीह की आज्ञाएं मानना सिखाते हैं। (मत्ती 28:20)
- मसीह के वचनों से बुद्धि का इस्तेमाल करते हुए वे सदस्यों के मनों में परमेश्वर के वचन की छाप छोड़ते या उसके द्वारा उन्हें चेताते हैं, वे डरपोकों को साहस दिलाते हैं,वे निकम्मे लोगों को चेतावनी देते और विरोध करने वाले लोगों को प्रेम से समझा देते हैं(कुलुस्सियों 3:16; 1 थिस्लुनिकियों 5:12-15; 2 तीमुथीयुस 2:23-26)
- वे सैद्धान्तिक बातों पर चर्चा करते (प्रेरितों के काम 15; 2 तीमुथीयुस 1:13) और झूठी शिक्षाओं का खण्डन करते हैं।

(4) प्राचीन का चौथा काम परमेश्वर व लोगों का सेवक होना है।

मत्ती 20:25-28; 1 पतरस 5:2-3 **पढ़ें।**

खोजें व चर्चा करें। मण्डली में परमेश्वर व लोगों का सेवक होने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। सेवक होने के नाते, प्राचीनों को स्वेच्छा से, सेंत मेंत व जिज्ञासा के साथ परमेश्वर व लोगों का सेवक होने की जिम्मेदारी सौंपी गयी है। सेवक होने के नाते प्राचीन दूसरों के फायदे के लिए काम करते हैं।

सेवा करना केवल काम ही नहीं परन्तु एक प्राचीन की विशेषता भी है। यह प्राचीन होने के लिए परमेश्वर की अपेक्षा का सार है। मण्डली में प्राचीनों क अगुवाई करने की शैली संसार के अगुवों के अगुवाई की शैली से बिल्कुल भिन्न होनी चाहिए। प्राचीनों को स्वेच्छा से, सेत मेत और जिज्ञासा के साथ सेवा करनी चाहिए(1 पतरस 5:2)।

यीशु और पतरस दोनो ने ही उन लोगों पर प्रभुता करने से मना किया है, जिन्हें परमश्वर ने प्राचीनों के हाथों में सौंपा है। वरन उन्हें मण्डली के लोगों के लिए एक आदर्श होना चाहिए। विश्वासियों को आदेश देते हुए अगुवाई करने की बजाय, प्राचीनों को उनके सामने एक नमूने के तौर पर चलना चाहिए। मण्डली के सदस्यों से सेवा टहल करवाने की बजाय,प्राचीनों को सदस्यों की सेवा करनी चाहिए(मरकुस 10:45; लूका 22:25-27)।

4. प्राचीनों का प्रशिक्षण ।

प्राचीन आवश्यक तौर पर थिओलोजिकल सेमिनरी या बाइबल कॉलेज जाकर ही प्रशिक्षित नहीं होते और न ही उनका पूर्णकाल के कार्यकर्ता होना ज़रूरी है ।

नये नियम में सामान्यत: पूर्ण समय के पासबान, उपदेशक व शिक्षक नहीं थे। फिर भी,प्राचीन को शिक्षा देने में निपुण(1तीमुथीयुस 3:2) और मसीह सिद्धान्तों की मजबूत पकड़ रखने वाला होना चाहिए(1तीतुस1:9)![1]

नये नियम मे कुछ प्राचीन केवल उपदेशक व शिक्षक ही थे(1 तीमुथीयुस 5:17), लेकिन बाइबल इस बारे में नहीं बताती है कि वे पूर्ण समय की सेवाकाई करने वाले लोग थे। बाइबल में वर्तमान काल में पाये जाने वाले बाइबल कौलेज के समान कॉलेज का जिक्र नहीं मिलता। बाइबल हमें यह नहीं बताती है कि जो लोग बाइबल कॉलेज या सेमिनरी में शिक्षा प्राप्त किये हुए है केवल उन्हें ही प्रचार करने या परमेश्वर के वचनों की शिक्षा देने का अधिकार है। सभी मसीहियों को एक दूसरे को सिखाने और चेताने के लिए प्रोत्साहित किया गया है (कुलुस्सियों 3:16; मत्ती 28:19)।

हालांकि बहुत से मसीही जन तीमुथीयुस और तीतुस को आधुनिक युग में पूर्ण समय के पासाबानों के रूप में मान्यता देते हैं, लेकिन वे मण्डल के प्राचीन (पास्टर)से थोड़ा सा बढकर थे। उन्होंने पौलुस के साथ लम्बी यात्राएं की थीं और वे उसके सहकर्मी व मिश्नरी थे। हालांकि तीमुथीयुस और तीतुस आधुनिक बाइबल कॉलेज के समान कॉलेज में प्रशिक्षित लोग नहीं थे,लेकिन उन्हें प्रेरित पौलुस के साथ रहते हुए ही प्रशिक्षण प्राप्त हो गया था, जिस प्रकार प्रेरितों ने यीशु के साथ रह कर ही प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया था।

5. प्राचीनों के अधिकार

(1) प्राचीनों को केवल अपने ही कार्य क्षेत्र में अधिकार प्राप्त था।

उनका अधिकार सीमित है। लोगों को उद्धार देने और उनकी बुलाहट को सुनिश्चित करने और कलीसिया में उन्हें विशेष जिम्मेदारी देने का काम यीशु मसीही का है। प्राचीन को विश्वासियों के धन और उनकी सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं है। उनको सदस्यों के परिवारों,नौकरियों और उनके समय पर कोई अधिकार नहीं है। इसलिए यीशु ने प्राचीनों को आज्ञा दी कि वे उन सदस्यों पर प्रभुता न करें जो उनके हाथों में सौंपे गये हैं।

(2) कम आयु के प्राचीनों को अधिकार है।

यद्यपि मण्डली में जवानों और बुजुर्ग प्राचीनों के बीच में एक दूसरे के प्रति अधीनता की आवश्यकता है(1पतरस 5:5), जवान प्राचीनों को कलीसिया के सदस्यों को शिक्षा देने,समझाने,डांटन और जरूरत पड़ने पर अपने से बड़ी उम्र के प्राचीनो को भी समझाने का अधिकार दिया गया है(1तीमुथीयुस 1:3-5; 4:11-13; 5:20; 2तीमुथीयुस 2:22-26)। फिर भी सारे प्राचीनों को एक दूसरे से आदर के साथ व्यवहार करना चाहिए (1तीमुथीयुस 3:2; 551-2;तीतुस 1:7)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]*
		परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना

आज सीखी गयी सभी बातों के आधार पर परमेश्वर को प्रतिउत्तर देते हुए समूह में छोटी प्रार्थना करें।

या समूह को दो दो या तीन के समूह में बांट लें और फिर सीखी गयी बातों के आधार पर प्रतिउत्तर देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]**
		अगले अध्याय के लिए

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ मिलकर " मसीही अगुवे की विशेषताएं" की शिक्षाओं के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: सभोपदेशक 5,6,7,8 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. बाइबल अध्ययन। घर में ही अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। प्रेरितों के काम 20:17-38। शीर्षक: संसार में कलीसिया की अगुवाई को आगे बढ़ाना। बाइबल अध्ययन में दिये गये पाँच कदमों को इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।